Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۙ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۱۳۸﴾

(सूरत आले- इम्रान आयत :130)

अनुवाद: निस्संदेह तुम से पहले कई सुन्नतें (आदर्श) गुज़र चुके हैं। अत: धरती में भ्रमण करो और देखो कि झुठलाने वालों का क्या परिणाम हुआ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 4

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 41

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

10 सफर 1440 हिजरी कमरी 10 इख़ा 1397 हिजरी शमसी 10 अक्तूबर 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

बुद्धिमान वह है जो नबी को पहचानता है क्योंकि वह ख़ुदा को पहचानता है। और मूर्ख वह है जो नबी का इन्कार करता है क्योंकि नबूवत का इंकार ख़ुदा के इंकार के लिए अनिवार्य है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

ख़ुदा की कुदरतों और चमत्कारों को सीमित समझना बुद्धिमता नहीं

ख़ुदा की कुदरत और चमत्कारों को सीमित समझना बुद्धिमता नहीं वह अपनी माही अत नहीं जानता और समझता और आसमानी बातों पर राय देता है ऐसे ही लोगों के लिए कहा-

तू कारज़ में रांको साख़्ति
कि बा आसमां नीज़ पर दाखती

इंसान के लिए आवश्यक है कि अपने सामर्थ्य से बढ़कर कदम न उठाए। अधिकतर बीमारियों का कारण और लक्षण डॉक्टरों को मालूम नहीं तो क्या ऐसी कमज़ोरी पर उसके लिए उचित है कि वह सामर्थ्य से बढ़कर चले, कदापि नहीं। अपितु अबूदियत का तरीका यही है कि 'सुबहानका ला इल्म लना' (अल बक़र:- 33) कहने वालों के साथ हो। देखो सितारे जो इतने बड़े-बड़े गोले हैं आसमान में बिना किसी सहारे के लटकते हैं और खुद आसमान बिना किसी सहारे के हज़ारों साल से इसी तरह चले आए हैं। चाँद प्रतिदिन साफ सुथरा निकलता है, सूर्य प्रतिदिन निकलता है और ठीक गति और रविश पर चलता है। हमारे कामों में कोई न कोई गलती ज़रूर हो जाती है परंतु अल्लाह तआला के काम देखो कि चांद-सूर्य अपने एक ही तरीके पर चलते हैं। यदि प्रतिदिन इन बातों को सोचो कि सूर्य प्रतिदिन निर्धारित तरीके पर निकलता है दिशाओं को बताता है तो दीवाना हो जाए। देखो हम पर इतनी हालतें आती हैं और सूर्य पर कोई हालत नहीं आती। एक घड़ी जो दो हज़ार रुपया की हो यदि वह 12 की बजाय 10 और 10 की बजाय 12:00 बजाए तो निकम्मी और व्यर्थ समझी जाएगी, परंतु ख़ुदा तआला की बनाई हुई घड़ी ऐसी है कि उसमें तनिक भी अंतर नहीं और न उसको किसी चाबी की आवश्यकता है न साफ करने की आवश्यकता। क्या ऐसे बनाने वाले की शक्तियों की गणना की जा सकती है। इंसान हैरान हो जाता है जब वह देखता है कि हमारी वस्तुएं, कपड़े, बर्तन इत्यादि जो प्रयोग में आते हैं घिसते रहते हैं, बच्चे जवान और बूढ़े होकर मरते हैं परंतु जो सूर्य कल निकला हुआ था आज भी वही सूर्य है और एक असंख्य ज़माने से इसी प्रकार चला आया है और चला जाएगा परंतु इस पर कोई परिवर्तन की अवस्था की या ज़माने का प्रभाव नहीं होता। कितनी गुस्ताखी है कि एक कीड़े होकर उस बुलन्द शान वाले ख़ुदा पर हमला करें और जल्दी से आदेश कर दें कि ख़ुदा में शक्ति नहीं।

अंबिया अलैहिमुस्सलाम के चमत्कारों का उद्देश्य

इस्लाम का ख़ुदा बड़ा शक्तिशाली ख़ुदा है किसी को अधिकार नहीं है कि उसकी शक्तियों पर ऐतराज़ करे। अंबिया अलैहिमुस्सलाम को जो चमत्कार दिए जाते हैं उसका कारण यही है कि इंसान का अनुभव पहचान नहीं कर सकता और जब इंसान विलक्षण बातों को देखता है तो एक बार तो यह कहने पर विवश हो जाता है कि वह ख़ुदा तआला की ओर से है परंतु यदि अपनी बुद्धि का दावा करे और ख़ुदा से समझने की शक्ति न मांगे तो दोनों ओर से मार्ग बंद हो जाता है। एक ओर चमत्कारों का इंकार दूसरी ओर तुच्छ बुद्धि का दावा। जिसका परिणाम यह होता है कि उन बारीक से बारीक वस्तुओं को पहचानने की चिंता में वह मूर्ख इंसान लग जाता है जो चमत्कारों की गहराई में है और जिसकी फिलासफी इंसानी बुद्धि और ऊपरी विचारों पर नहीं खुल सकती। इससे वह इंकार की ओर लौटते लौटते नबूवत का ही इंकारी हो जाता है और शंकाओं और संदेशों का एक बहुत सा ढेर जमा कर लेता है जो उसकी दुर्भाग्य का कारण होकर रहता है। कभी यह कह देता है कि यह भी हमारे जैसा सामान्य व्यक्ति है जो खाता है पीता है और मानवीय आवश्यकता रखता है, उसकी शक्तियां हमसे कैसे बढ़ सकती हैं, उसकी शक्तियों में आध्यात्मिकता की शक्ति और दुआओं में स्वीकारिता का प्रभाव क्यों विशेष रूप से आ जाएगा? अफ़सोस इस प्रकार की बातें बनाते और ऐतराज़ करते हैं जिसके कारण जैसा मैंने अभी कहा नबूवत का ही इन्कार कर देते हैं। सोचने और समझने का स्थान है कि सामान्य तौर पर तो मानते नहीं और असामान्य रूप पर ऐतराज़ करते हैं। अब यह जानबूझ कर अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के वजूद का इन्कार नहीं तो क्या है? क्या इन्हीं बुद्धि और विवेकों पर गर्व है कि फिलॉस्फर कहला कर अधर्मी अथवा मूर्ति पूजक हो गए। अल्लाह तआला की छुपी हुई शक्तियां कभी इलहाम और वह्यी के सिवा अपना चमत्कार नहीं दिखा सकतीं। वह वह्यी और

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का अमरीका का सफर, अक्तूबर 2018 ई (भाग-10)

मैडीकल पढ़ने का शौक़ पैदा करो क्योंकि हमें डाक्टरों की ज़रूरत है वकीलों की नहीं

तुम्हें दूसरी लड़कियों के लिए अनुकरण योग्य नमूना होना चाहिए और इसी तरह तुम्हारे अख़लाक़, तुम्हारी नमाज़ें, गुफ़्तगु और लिबास भी।

आपके लिबास में लज्जा होनी चाहिए, वाक़फ़ात नौ को व्यवहारात्मक नमूना दिखाना पड़ेगा

लज्जा ईमान का हिस्सा है, लज्जा ही असल चीज़ है और पर्दे का हुक्म अल्लाह तआला का है

जो भी बात अल्लाह तआला के हुक्म से टकराए चाहे वह माता पिता कहें, पति कहे या कोई भी कहे वह नहीं माननी

वाक़फ़ात नौ बच्चियों को सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ की क़ीमती नसीहतें

अहमदी सियास्तदान बन सकते हैं, वाक़फ़ीन नौ सियास्तदान नहीं बन सकते

हमें इस वक़्त डाक्टरों, टीचरों और इंजीनीयर्ज़ और एकाऊंटैंट की भी ज़रूरत है लेकिन अधिकतर डाक्टरों और टीचरों की ज़रूरत है

मैंने दो साल पहले कैनेडा में ख़ुत्बा दिया था वही वाक़फ़ीन नौ का चार्टर है, इस में इकत्तीस बिन्दु थे , उन पर अनुकरण करो

तुम लोग पाँच नमाज़ें नियमित पढ़ा करो, नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ा करो, क़ुरआन करीम की तिलावत नियमित करो। अपनी दोस्तियाँ अच्छे लड़कों से रखो और पढ़ाई की तरफ़ ध्यान दो, यह चार बातें याद रख लो और बाक़ी बिन्दु इस ख़ुत्बा से ले लेना।

वाक़फ़ीन नौ बच्चों को सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ को क़ीमती नसीहतें।

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

दिनांक 26 अक्तूबर 2018, दिन जुम्अ:

माईकल काऊल (मेम्बर अमेरीकन कांग्रेस) की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से मुलाक़ात

प्रोग्राम के अनुसार साढ़े चार बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए। मेम्बर अमेरीकन कांग्रेस Michael McCaul साहिब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात के लिए आए हुए थे। महोदय के साथ उनके दफ़्तर के दो ओहदेदार प्रैस सेक्रेटरी और उच्च सहायक भी मुलाक़ात में शामिल थे।

*कांग्रेस मैन ने निवेदन किया कि हम हुज़ूर को अमरीका में ख़ुश-आमदीद कहते हैं। वह यह बताते हुए ख़ुशी महसूस कर रहे हैं कि उनके दफ़्तर के सम्पर्क की वजह से अमरीकी वज़ारत-ए-दाख़िला औरा प्रबन्धकों ने हुज़ूर अनवर के दौरा के लिए पूर्ण विशेष सहयोग की यक़ीन दहानी करवाई है और यह हुज़ूर अनवर के शान के योग्य भी है क्योंकि हुज़ूर अनवर इंतिहापसंदी की विरोध करते हैं और उसके ख़िलाफ़ आवाज़ उठाते हैं और दुनिया में भाईचारा और अमन के स्थापना के करने वाले हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: आपने जिन विचारों को प्रकट किया है इस पर आपका शुक्रिया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि मैं तो इस्लाम की असल और वास्तविक शिक्षा ही बयान करता हूँ। आजकल इंतिहापसंदों और दहश्तगर्दों की तरफ से जो कार्यवाहियां हो रही हैं उनका इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से कोई सम्बन्ध नहीं है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया इस्लाम के असल अर्थ ही अमन के हैं, सलामती के हैं।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पेशगोई फ़रमाई थी कि आख़री ज़माना में एक मुस्लेह, एक सुधारक आएगा जो इस्लाम का संस्कार करेगा और इस्लाम की वास्तविक शिक्षा बताएगा। अत: आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पेशगोई के अनुसार जमाअत अहमदिया के संस्थापक अहमदिया ने इस्लाम की असली और वास्तविक शिक्षा को दुनिया के सामने पेश किया और आज जमाअत अहमदिया इस्लाम की वास्तविक शिक्षा, अमन की शिक्षा हर जगह पेश कर रही है। हम विरोधियों के एतराज़ों का जवाब देने में कोई शस्त्र प्रयोग नहीं करते बल्कि इस्लाम की सच्ची शिक्षा और दलीलें प्रयोग करते हैं और दलीलों से इस्लाम की प्रतिरक्षा करते हैं ।

*इस के बाद मैंबर कांग्रेस ने इंतिहापसंदों और दहश्तगर्दों की तरफ़ से होने वाली कार्यवाईयों का ज़िक्र किया।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: जो लोग radicalize हो रहे हैं उनकी कोई वजह है। तथाकथित मुसलमान उल्मा उनको ऐसी ग़लत शिक्षा देते हैं जिसका इस्लाम से कोई सम्बन्ध नहीं है। ना वह शिक्षा क़ुरआन करीम में है और ना नबी करीम के अनुकरण से ज़ाहिर है। यह ग़लत शिक्षा उन लोगों को इंतहापसंद बना रही है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: एक तो शैक्षिक स्तर की कमी की वजह से लोग मुल्ला के पीछे चलते हैं और जो पढ़े लिखे लोग हैं उनको भी धार्मिक इल्म नहीं होता, वे भी जो मुल्ला कहता है इस के पीछे चल पड़ते हैं और फिर आर्थिक बदहाली और रोज़गार की कमी भी इंतिहापसंदी को फैलने का अवसर उपलब्ध करती है। इसका हल यही है कि मुसलमानों के लिए शिक्षा और रोज़गार के अवसर उपलब्ध किए जाएं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: आप अहमदियों में ऐसा नहीं देखेंगे कि इन में कोई इंतिहापसंदी की तरफ़ झुक रहो हो क्योंकि अहमदी इस्लाम की सच्ची और वास्तविक शिक्षा को जानते हैं। इसलिए वह radicalize नहीं होते। दुनिया के किसी भी देश में आबाद जो अहमदी है, इस का व्यवहार और भूमिका और अनुकरण एक जैसा ही है क्योंकि वे इस्लाम की वास्तविक शिक्षा पर अनुकरण करने वाले है।

कांग्रेस मैन ने इंतिहापसंदी और अग्रवादी कार्यवाईयों के ख़िलाफ़ जमाअत अहमदिया के भूमिका की महत्व को बयान किया और कहा कि मुस्लिम दुनिया में हुज़ूर अनवर ही वास्तविक राहनुमा हैं और वह चाहते हैं कि सारी मुसलमान हुज़ूर अनवर के उपदेशों को समझें और इस पर अनुकरण करें। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: इंतिहापसंदी के ख़िलाफ़ जंग का हल शायद हमारी ज़िन्दगी में तो ना हो लेकिन आने वाली नस्ल की ज़िन्दगी में शायद हो जाएगी।

*ग्वेटामाला में हस्पताल के स्थापना औरा इस के उद्घाटन का ज़िक्र हुआ। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि हमने वहां यह हस्पताल सिर्फ़ लोगों की सेवा के लिए खोला है। हमने वहां से कोई रक़म नहीं कमानी। हमने अफ्रीक़ा के विभिन्न

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाह तआला की सीमाएं जो हैं उनसे आगे नहीं बढ़ना उनके अंदर रहना है अतः यही हर अहमदी को अपने सामने रखना चाहिए और फिर आज्ञाकारिता के दायरे के अंदर रहना चाहिए।

"अल्लाह तआला से डर और जान ले कि तू अल्लाह का तक़्वा इख्त्यार नहीं कर सकता जब तक तू अल्लाह पर ईमान न लाए और हर प्रकार के अच्छी बुरी तकदीर पर भी ईमान न लाए। अतः अगर तू इसके अतिरिक्त किसी आस्था पर मरा तो तू आग में जाएगा।" (हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि० की अंतिम वसीयत)

इखलासो वफ़ा के जीते जागते सबूत बद्री सहाबी हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि अल्लाह अन्हु की पवित्र जीवनी का मनमोहक वर्णन

अल्लाह तआला इन सहाबा रिज़वानुल्लाह अलैहिम के दरजात बुलंद फरमाए जिन्होंने हमें कुछ ऐसी बातें पहुंचाई जो हमारे लिए रूहानियत के अतिरिक्त व्यवहारिक जिंदगी गुज़ारने के लिए भी ज़रूरी थीं।

मुकर्रम सईद सोकिया साहब (सीरिया) मुकर्रम अत्तय्यबुल अबीदी साहिब (त्यूनस) और हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमतुल्लाह की बड़ी बेटी मोहतरमा अमतुश्शकूर साहिबा की वफात पर मरहूमीन का ज़िक्रे खैर और नमाज़-ए-जुमा व असर के बाद नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 6 सितम्बर 2019 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद। (टिलफोर्डसरे), यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

पिछले ख़ुत्बे में हज़रत उबादा बिन सामित का मैं वर्णन कर रहा था जो पूरा नहीं हुआ था उनके बारे में कुछ अधिक घटनाओं और रिवायत का अब मैं वर्णन करता हूं। इतिहास में लिखा है कि जब अब्दुल्लाह बिन उबई के कहने पर उसके हलीफ कबीला बनू कैनका ने मुसलमानों से जंग की। तो हज़रत उबादा भी अब्दुल्लाह बिन उबई की तरह उनके हलीफ थे परंतु इस जंग की हालत की वजह से यह उस कबीले से अलग हो गए और अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खातिर उनके हलीफ होने से बरी हो गए। इतिहास में लिखा है कि इसके बाद यह आयत उतरी-

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَ النَّصٰرٰٓى اَوْلِيَآءَ ۘ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ وَ مَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاِنَّهٗ مِنْهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ

(अलमाइदा-52)

अर्थात हे वे लोगो जो ईमान लाए हो यहूदी और ईसाइयों को दोस्त न बनाओ वे आपस में ही एक दूसरे के मित्र हैं और तुम में से जो उनसे दोस्ती करेगा वह उन्हीं का होकर रहेगा । निस्संदेह अल्लाह अत्याचारी क़ौम को हिदायत नहीं देता। यहां यह स्पष्ट कर दूं कि इसका यह अर्थ नहीं कि कभी भी किसी ईसाई यहूदी को लाभ पहुंचाने वाली बात नहीं करनी या उनसे संबंध नहीं रखने बल्कि अर्थ यह है कि वह यहूदी या ईसाई जो तुम्हारे साथ जंग की हालत में हैं उनसे दोस्ती न करो। वरना दूसरे स्थान पर अल्लाह तआला ने स्पष्ट किया है कि अल्लाह तआला तुम्हें उनके साथ नेकी और न्याय करने से नहीं रोकता जो तुमसे जंग नहीं करते या जिन्होंने तुम्हें घरों से नहीं निकाला, चाहे वह काफिर हैं या यहूदी और ईसाइयों में से हैं। जैसा कि अल्लाह तआला फरमाता है-

لَا يَنْهٰكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ لَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ فِى الدِّيْنِ وَ لَمْ يُخْرِجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْهُمْ وَ تُقْسِطُوْٓا اِلَيْهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ

(सूरह अल मुमतहिना 9)

अर्थात अल्लाह तुम्हें उन से मना नहीं करता जिन्होंने तुम से धर्म के मामले में जंग नहीं की और न तुम्हें देश से निकाला कि तुम उनसे अच्छाई करो और उनसे न्याय के साथ पेश आओ। निस्संदेह अल्लाह न्याय करने वालों से प्रेम करता है।

अतः यहां जो स्पष्ट किया गया है पहली आयत में यह बताया गया है कि कमज़ोरी और भय और बुज़दिली की वजह से गैर मुस्लिमों से संबंध नहीं रखने। उद्देश्य यह है कि तुम्हारा अल्लाह तआला पर भरोसा होना चाहिए और अपनी ईमानी हालत को बेहतर करोगे तो अल्लाह तआला भी तुम्हारे साथ होगा लेकिन हम आज कल देखते हैं कि दुर्भाग्य से मुसलमान हुकूमतें सहायता के लिए उन्हीं गैर लोगों की गोद में गिर रही हैं और उनसे भयभीत भी हैं और दूसरों से सहायता लेने की वजह से फिर परिणाम यह निकल रहा है कि प्रत्येक मुसलमान देश दूसरे मुसलमान के खिलाफ है। यही लोग फिर इस्लाम की जड़ें काटने वाले भी हैं। बहरहाल हम यह दुआ करते हैं कि अल्लाह तआला इन मुसलमान हुकूमतों को भी अक्ल दे। बहरहाल इस घटना का वर्णन हो रहा है कि बनू-क़ैनका ने जब जंग की तो उसके बाद उनका घेराव किया गया, जंग हुई और वे पराजित हुए। सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन में इस घटना का विभिन्न इतिहास कि पुस्तकों से लेकर जो वर्णन किया गया है वह इस प्रकार है कि इस जंग के बाद जो बनू-क़ैनका की पराजय हुई तो उनको देश निकाला दे दिया गया। इसका विवरण इस प्रकार है कि जब जंग-ए-बदर हो चुकी और अल्लाह तआला ने अपने फज़ल से मुसलमानों को बावजूद कम संख्या और असहाय होने के कुरैश के एक बड़े जर्रार लश्कर पर बड़ी विजय दी और मक्का के बड़े-बड़े सरदार मिट्टी में मिल गए तो मदीने के यहूदियों की जो छुपी हुई ईर्ष्या थी वह भड़क उठी। उन्होंने मुसलमानों के साथ खुल्लम खुल्ला नोकझोंक शुरू कर दी। सभाओं में खुल्लम-खुल्ला तौर पर कहना शुरू कर दिया कि कुरेश की सेना को पराजित करना कौन सी बड़ी बात थी। हमारे साथ मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि

वसल्लम का मुकाबला हो तो हम बता दें किस तरह लड़ा करते हैं। यहां तक कि एक सभा में उन्होंने खुद आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुंह पर इसी प्रकार के शब्द कहे। अत: रिवायत में आता है कि जंग-ए-बदर के बाद जब आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना आए तो आपने एक दिन यहूदियों को इकठ्ठा करके उनको उपदेश दिया और अपना दावा प्रस्तुत करके, इस्लाम की ओर निमंत्रण दिया। आपकी शांतिपूर्ण और सहानुभूतिपूर्ण भाषण का यहूदियों के सरदारों ने इन शब्दों में उत्तर दिया कि हे मोहम्मद! तुम संभवत कुछ कुरैश के लोगों को क़त्ल करके अहंकारी हो गए हो और वे लोग जंग की कला से अपरिचित थे। अगर हमारे साथ तुम्हारा मुकाबला हो तो तुम्हें पता लग जाएगा कि लड़ने वाले ऐसे होते हैं और यहूद ने केवल सामान्य धमकी पर ही संतोष नहीं किया बल्कि लिखा है कि ऐसा ज्ञात होता था कि उन्होंने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़त्ल के भी षडयंत्र शुरू कर दिए थे क्योंकि रिवायत में आता है कि जब उन दिनों में तल्हा बिन बरा जो एक श्रद्धावान सहावी थे, मरने लगे तो उन्होंने वसीयत की कि अगर मैं रात को मरू तो नमाज़े जनाज़ा के लिए आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सूचना न दी जाए। कहीं ऐसा न हो कि मेरे कारण आप के साथ यहूदियों की ओर से कोई घटना घट जाए। अर्थात आप रात के समय जनाज़े के लिए बाहर आएँ और यहूदियों को आप पर आक्रमण करने का अवसर मिले। अत: जंग-ए-बदर के बाद यहूदियों ने खुल्लम-खुल्ला उपद्रव शुरू कर दिए और चूंकि मदीने के यहूदियों में बनू-क़ैनका सबसे अधिक शक्तिशाली और बहादुर थे इसलिए सबसे पहले उन्हीं की ओर से वादाखिलाफी हुई। अत: इतिहासकार लिखते हैं कि मदीने के यहूदियों में सबसे पहले बनू-क़ैनका ने संधि को तोड़ा जो उनके और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मध्य हुई थी। और बदर के बाद उन्होंने बहुत उद्दंडता आरंभ कर दी और खुल्लम-खुल्ला द्वेष और ईर्ष्या का प्रकटन किया और वादों को तोड़ दिया।

परंतु बावजूद इस प्रकार की बातों के मुसलमानों ने अपने आका आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मार्गदर्शन के अंतर्गत हर प्रकार से सब्र से काम लिया और अपनी तरफ से कोई पहल नहीं की बल्कि हदीस में आता है कि इस संधि के बाद जो यहूदियों के साथ हुई थी, आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम विशेष रूप से यहूदियों की दिलदारी का ध्यान रखते थे। अत: एक बार एक मुसलमान और एक यहूदी में कुछ मतभेद हो गया। यहूदी ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की तमाम नबियों पर प्रतिष्ठा वर्णन की। सहाबी को इस पर गुस्सा आया और उसने यहूदी के साथ कुछ सख्ती की और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सबसे श्रेष्ठ रसूल बताया। जब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस घटना की सूचना मिली तो आप क्रोधित हुए और उस सहाबी को डांट-डपट की और समझाया कि तुम्हारा क्या काम है कि तुम ख़ुदा के रसूलों की एक दूसरे पर बड़ाई वर्णन करते फिरो। और फिर आपने मूसा की एक आंशिक विशेषता वर्णन करके यहूदी की दिलदारी फरमाई। परंतु बावजूद इस दिलदाराना सलूक के, नरमी के सलूक के, मोहब्बत के सलूक के यहूदी अपनी शरारत में तरक्की करते गए और अंतत: यहूद की ओर से ही जंग का कारण उत्पन्न हुआ और उनकी जो हार्दिक शत्रुता थी उनके सीनों में समा न सकी बल्कि बाहर निकल आई। और यह इस तरह पर हुआ कि एक मुसलमान औरत बाज़ार में एक यहूदी की दुकान पर कुछ सौदा खरीदने के लिए गई। कुछ दुष्ट यहूदियों ने जो उस समय उस दुकान पर बैठे हुए थे। उसे अत्यंत अश्लील तरीके से छेड़ा और स्वयं दुकानदार ने यह शरारत की कि उस औरत के कपड़े के नीचे वाले कोने को उसकी बेख़बरी में किसी कांटे वगैरह से उसकी पीठ के कपड़े से टांक दिया। कोई चीज़ कोई हुक लगा हुआ होगा या काँटा होगा, कोई चीज़ पड़ी होगी उससे उसके कपड़े को वहां टांक दिया। परिणाम यह हुआ कि जब औरत उनकी अश्लील हरकतों को देखकर वहां से उठकर लौटने लगी तो वह नंगी हो गई और कपड़ा उतर गया। इस पर उस यहूदी दुकानदार और उसके साथियों ने ज़ोर से ठहाका लगाया और हंसने लग गए।

उस मुसलमान औरत ने शर्म के मारे एक चीख मारी और सहायता के लिए पुकारा। संयोग से एक मुसलमान उस समय समीप ही उपस्थित था। वह लपक कर अवसर पर पहुंचा और वहां आपस में लड़ाई शुरू हो गई। यहूदी दुकानदार मारा गया जिस पर चारों तरफ से उस मुसलमान पर तलवारें बरस पड़ीं। उन्होंने हमला कर दिया और वह स्वाभिमानी मुसलमान वहीं ढेर हो गया, वहीं क़त्ल हो गया, शहीद हो गया।मुसलमानों को इस घटना का ज्ञान हुआ तो फिर उनका भी क़ौमी स्वाभिमान भड़क उठा, उनकी आंखों में खून उतर आया और दूसरी ओर यहूदी जो इस घटना को लड़ाई का बहाना बनाना चाहते थे, एक बड़ी भीड़ के रूप में इकट्ठे हो गए और एक हंगामे की सूरत पैदा हो गई।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सूचना मिली तो आपने बनू-क़ैनका के रईसों को इकट्ठा करके कहा कि यह तरीका अच्छा नहीं है तुम इन शरारतों को छोड़ दो और ख़ुदा से डरो। उन्होंने बजाय इसके कि अफसोस करते, पछतावा करते और माफी मांगते उन्होंने सामने से अत्यंत अहंकार पूर्वक उल्टा जवाब दिया और फिर वही धमकी दोहराई के बदर की विजय पर घमंड न करो जब हम से मुकाबला होगा तो पता लग जाएगा कि लड़ने वाले ऐसे होते हैं। बहरहाल मजबूर होकर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबा की एक समाअत के साथ लेकर बनू-क़ैनका के क़िलों की तरफ रवाना हो गए। अब यह आखिरी अवसर था कि वह अपने कर्मों पर पश्चाताप करते। जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबियों को लेकर गए तो यहूदियों को चाहिए था कि जो कुछ उन्होंने अत्याचार किया था उस पर पश्चाताप करते और मैत्री की ओर कदम बढ़ाते, परंतु वे सामने से जंग के लिए खड़े हो गए। बहराल जंग का ऐलान हो गया और इस्लाम और यहूदियों की ताकतें एक दूसरे के मुकाबले पर निकल आईं। उस ज़माने के दस्तूर के अनुसार जंग का यह तरीका भी होता था कि अपने क़िलों में सुरक्षित होकर बैठ जाते थे और विरोधी पक्ष क़िलों का घेराव कर लेता था। अर्थात जो आक्रमणकारी होता था किले का घेराव कर लेता था। अवसर मिलते ही एक दूसरे के खिलाफ हमले होते रहते थे। यहां तक कि या तो घेराव करने वाली फौज किले पर कब्ज़ा करने से निराश होकर घेराव छोड़ देती थी और चली जाती थी। और यह किले के अंदर के लोगों की विजय समझी जाती थी कि उनकी विजय हुई। या फिर यह होता था कि जो फ़ौज किले के अंदर होती थी वह मुकाबले की शक्ति न पाकर किले का द्वार खोल कर अपने आपको विजेता क़ौम के सुपुर्द कर देती थी। इस अवसर पर भी बनू-क़ैनका ने यही मार्ग अपनाया और अपने क़िलों में बंद होकर बैठ गए।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनका घेराव किया किले को चारों ओर से घेर लिया और 15 दिन तक बराबर घेराव जारी रखा। अंतत: जब बनू-क़ैनका का सारा सामान खत्म हो गया और अहंकार टूट गया तो उन्होंने इस शर्त पर अपने क़िलों के द्वार खोल दिए कि उनके माल मुसलमानों के हो जाएंगे परंतु उनकी जानों और उनके परिवार पर मुसलमानों का कोई हक नहीं होगा। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस शर्त को स्वीकार कर लिया। क्योंकि यद्यपि मूसा की शरीयत की दृष्टि से यह सब लोग क़त्ल करने योग्य थे। ऐसी सूरत में तौरात जो मुस्वी शरीयत है यही कहती है कि यह लोग क़त्ल कर दिए जाएं और संधि की दृष्टि से उन लोगों पर मूसा की शरीयत का फैसला ही जारी होना चाहिए था। परंतु इस क़ौम का यह पहला जुर्म था और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रहीम और करीम तबीयत सज़ा की ओर जो एक अंतिम इलाज होता है, आरंभ में ही माइल नहीं हो सकती थी परंतु दूसरी ओर ऐसे वादा खिलाफ और शत्रु क़बीला का मदीना में रहना भी एक आस्तीन के सांप को पालने से

कम नहीं था अर्थात आस्तीन में सांप पालने के बराबर था। अत: जब ऑस और खज़रज का एक मुनाफिक गिरोह पहले से मदीना में मौजूद था तो बाहरी ओर से भी समस्त अरब के विरोधियों ने मुसलमानों की नाक में दम कर रखा था। ऐसे हालात में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यही फैसला हो सकता था कि बनू कैनका मदीने से चले जाएं। यह सज़ा उनके अपराध के मुकाबले में और उसके अलावा उस ज़माने के हालात को देखते हुए एक बहुत नरम सज़ा थी और वास्तव में इसमें केवल अपनी सुरक्षा का पहलू मद्देनज़र रखा था। उद्देश्य यह था कि मदीना के लोगों की मदीना के मुसलमानों की सुरक्षा हो जाए अन्यथा हज़रत मिर्जा बशीर अहमद साहब यह लिखते हैं कि अरब की खानाबदोश क़ौम के निकट तो घर छोड़ना कोई बड़ी बात न थी, फिरते रहते थे, एक जगह से दूसरी जगह हिजरत करते रहते थे। विशेष रूप से जब किसी कबीला की जायदाद और ज़मीनों और बागों के रूप में न हो। जैसा के बनू कैनका की नहीं थी अर्थात उनकी जायदादें नहीं थीं और फिर सारे के सारे कबीले को बड़े अमन और अमान के साथ एक स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान जाकर आबाद होने का अवसर मिल जाए। अत: बनू कैनका बड़े सकून के साथ मदीना छोड़कर सीरिया की ओर चले गए। उनके जाने के समस्त प्रबंध और निगरानी का काम आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने सहावी उबादा बिन सामित के सुपुर्द किया जो उनके हलीफों में से थे जिनका अभी वर्णन हो रहा है। अत: उबादा बिन सामित कुछ मंजिल तक बनू कैनका के साथ गए और फिर उन्हें सुरक्षा के साथ आगे रवाना करके वापस लौट आए। माले ग़नीमत जो मुसलमानों के हाथ आया वह केवल जंगी सामान था या जो उनका पेशा था उससे जुड़े हुए उपकरण थे। और उसके अलावा कोई ऐसी चीज़ नहीं थी जो मुसलमानों ने ग़नीमत में ली हो

(उद्धृत सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन स० पृष्ठ 458 460)

इसके बारे में सीरत हलबिया में भी कुछ विवरण है उसमें लिखा हैकि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आदेश दिया कि उन यहूदियों को मदीने से हमेशा के लिए निकालकर देश निकाला दे दिया जाए। उनको देश से निकालने की ज़िम्मेदारी आपने हज़रत उबादा बिन सामित के सुपुर्द की और यहूदियों को मदीने से निकल जाने के लिए 3 दिन की मोहलत दी। अत: यहूदी 3 दिन बाद मदीने को अलविदा कहकर चले गए। इससे पहले यहूदियों ने हज़रत उबादा बिन सामित से निवेदन किया था कि उनको 3 दिन की जो मोहलत दी गई है उसमें कुछ बढ़ोतरी कर दी जाए परंतु हज़रत उबादा ने कहा कि नहीं एक पल भी तुम्हें मोहलत नहीं दी जा सकती। फिर हज़रत उबादा ने अपनी निगरानी में उनको देश से निकाला और यह लोग सीरिया देश की एक बस्ती के मैदानों में जा बसे। (सीरत हलबिया भाग 2, बाब ज़िक्रे मग़ाज़िया स० गज़्वा बनी कैनका दारुल कुतुबुल इल्मिया, बैरूत 2002 ई०)

हज़रत उबादा बिन सामित से हदीसों की बहुत सारी दूसरी रिवायतें भी मरवी हैं। एक रिवायत उनसे यह मिलती है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की व्यवस्थाएं बहुत अधिक थीं इसलिए मुहाजिरीन में से कोई आदमी जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित होता तो रसूलुल्लाह उसे क़ुरआन सिखाने के लिए हम में से किसी के हवाले कर देते थे कि उनको ले जाओ और क़ुरआन सिखाओ, धार्मिक शिक्षा भी सिखाओ। कहते हैं कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक आदमी को मेरे सुपुर्द किया वह मेरे साथ घर में रहता था और मैं उसे अपने घरवालों के खाने में सम्मिलित करता था। उसे क़ुरआन पढ़ाता था। जब वह अपने घरवालों के पास वापस जाने लगा तो उसने विचार किया कि उस पर मेरा हक बनता है यानी उसके रहने के कारण और इतनी सेवा की वजह से और क़ुरआन सिखाने की वजह से उसके ऊपर मेरा कुछ हक बन जाता है। अत: इस वजह से उसने मुझे एक कमान उपहार स्वरूप दी। तीर कमान की कमान उपहार दिया और कहते हैं कि वह ऐसी उत्तम श्रेणी की कमान थी कि उससे अच्छी लकड़ी और नरमी में उससे बेहतरीन कमान मैंने पहले कभी नहीं देखी थी। कहते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ और उसके बारे में पूछा कि अल्लाह के रसूल इसके बारे में आपकी क्या राय है इस तरह वह मुझे कमान उपहार में दे कर गया? आपने फरमाया कि यह तुम्हारे कंधों के दरमियान एक आग है जो तुमने लटकाई है अर्थात ये उपहार जो तुम ले रहे हो वह इसलिए दे गया है कि तुमने उसे क़ुरआन पढ़ाया है और इस प्रकार यह तुमने आग ली है जो अपने कंधों में लटका रहे हो। (मुस्नद अहमद बिन हंबल, जिल्द 7 पृष्ठ 563, मुस्नद उबादा बिन सामित हदीस 23146)

एक और रिवायत भी है कि हज़रत उबादा बिन सामित ने बयान किया कि मैंने अहले सुफा में से कुछ लोगों को क़ुरआन पढ़ाया और लिखना सिखाया तो उनमें से एक व्यक्ति ने मेरे पास तोहफे में कमान दी। मैंने दिल में विचार किया कि यह कोई माल तो है नहीं, कोई ऐसी नकद चीज़ तो है नहीं, सोना चांदी तो है नहीं, न कोई करेंसी है और मैं इस से अल्लाह की राह में तीरंदाज़ी करूंगा। एक कमान ही है न मेरे काम आएगी अगर कभी जिहाद का अवसर मिला तो तीरंदाज़ी के काम आएगी। अल्लाह के रास्ते में इस्तेमाल होनी है। बहरहाल कहते हैं मैंने रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इस बारे में पूछा तो आपने फरमाया कि अगर तुम आग का हार पहनना पसंद करते हो तो उसे स्वीकार कर लो। (सुनन इब्ने माजा किताबुत्तिजारात, बाबुल अजर अला तालीमुल क़ुरआन, हदीस 2157)

अर्थात अगर तुम चाहते हो कि आग का एक हार तुम्हारे गले में पहनाया जाए तो ठीक है ले लो। यह दोनों रिवायतें जो हैं एक ही तरह की हैं अलग-अलग स्थानों से आई हुई हैं। व्याख्याकारों ने इस रिवायत से यह व्याख्या की है कि मानो कमान क़ुरआन पढ़ाने की कीमत के तौर पर थी। जिसे हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नापसंद किया। अत: वे लोग जो अलग से क़ुरआन करीम पढ़ाने को अपना रोज़गार बना लेते हैं उनके लिए भी इसमें मार्गदर्शन है।

हज़रत राशिद बिन हुबैश से रिवायत है कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत उबादा बिन सामित को देखने के लिए उनके घर पर गए जबकि वह बीमार थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि क्या तुम लोग जानते हो कि मेरी उम्मत के शहीद कौन लोग हैं? तो लोग एक दूसरे की ओर देखने लगे। हज़रत उबादा ने उनसे कहा कि मुझे सहारा देकर बिठा दो। अत: लोगों ने आप को बिठाया तो हज़रत उबादा ने कहा कि हे अल्लाह के रसूल आप ने सवाल किया है कि शहीद कौन लोग हैं तो जो बहादुरी और दृढ़ता पूर्वक मुकाबला करने वाला और सवाब की नीयत रखने वाला हो वह शहीद है। रसूल अल्लाह ने फरमाया कि अगर सिर्फ इतना ही है तो इस तरह तो फिर मेरी उम्मत के शहीद बहुत थोड़े रह जाएंगे। फिर आप ने फरमाया कि अल्लाह तआला के रास्ते में क़त्ल होना शहादत है, ताऊन की वजह से मर जाना भी शहादत है, एक महामारी जो फैलती है उसमें अगर मोमिन भी किसी कारण लपेट में आ जाते हैं और वे अच्छे मोमिन हैं तो वह ऐसी सूरत में शहादत है। फिर पानी में डूब कर मर जाना भी शहादत है और पेट की बीमारी की वजह से मरना भी शहादत है और आपने फरमाया कि नफास की हालत में मरने वाली औरत को उसका बच्चा अपने हाथ से खींच कर जन्नत में ले जाएगा। (मुसनद अहमद बिन हम्बल, जिल्द 5 पृष्ठ 492) अर्थात ऐसी औरत जो बच्चे के जन्म के समय रक्त बहने के कारण मर जाती है या नफास की हालत में जो 40 दिन तक रहती है इससे भी बच्चे के जन्म के कारण और उसी हालत में कमजोरी के कारण मौत हो जाती है तो फरमाया कि उसे भी उसका बच्चा खींचकर जन्नत में ले जाएगा अर्थात बच्चा उसको जन्नत में ले जाने का कारण बनेगा।

जो रिवायत मैंने वर्णन की है उससे मिलती-जुलती सही बुखारी में एक

रिवायत है। हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि शहीद पांच हैं- ताऊन से मरने वाला, पेट की बीमारी से मरने वाला, डूब कर मरने वाला, दबकर मरने वाला और अल्लाह की राह में शहीद होने वाला।(सही बुखारी किताब उल जिहाद वस्सैर, बाब शहादत हदीस नंबर 2829)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को ताऊन एक निशान की सूरत में बताया गया था। इसके लिए अब यह निशानी थी कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जो मानने वाले लोग हैं, सही ईमान लाने वाले हैं, उनके ऊपर उसका आक्रमण नहीं होगा इसलिए यहां एक बिल्कुल और सूरत बन जाती है लेकिन सामान्य रूप से अगर महामारी फैली हुई है और एक मोमिन है और कामिल मोमिन है वह अगर इस कारण मर जाता है तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि वह शहीद है।

इस्माइल बिन उबेद अंसारी वर्णन करते हैं कि हज़रत उबादा ने हज़रत अबू हुरैरा से फरमाया कि हे अबू हुरैरा! आप उस समय हमारे साथ न थे जब हम लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बात की थी हमने आपसे चुस्ती और सुस्ती हर हाल में बात सुनने और मानने और खुशहाली और तंगी में खर्च करने पर अच्छाई का आदेश देने और बुराई से रोकने पर, अल्लाह तआला के बारे में सही बात कहने और उस मामले में किसी मलामत करने वाले की मलामत की परवाह न करने पर और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मदीना आने पर उनकी सहायता करने और अपनी जानों और अपने बीवी बच्चों की तरह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुरक्षा करने की शर्त पर बैअत की थी। यह सारी बातें ऐसी यहीं जिन पर हमने बैअत की थी जिसके बदले में हमारे लिए जन्नत का वादा है। अत: यह है रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बैअत जिस पर हमने बैअत की। जो उसे तोड़ता है वह अपना नुकसान करता है। जो इन शर्तों को जिस पर हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बैअत की पूरा करेगा तो अल्लाह तआला उस बैअत की वजह से नबी सल्लल्लाहो वसल्लम के द्वारा किया हुआ वादा पूरा करेगा। हज़रत मुआविया रज़ि० ने एक बार हज़रत उस्मान गनी रज़ि० को पत्र लिखा कि हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि० की वजह से सीरिया और सीरिया वाले मेरे विरुद्ध शोर कर रहे हैं। अब या तो आप उबादा को वापस बुला लें या फिर उनके और सीरिया के मध्य से मैं हट जाता हूं अर्थात मैं यहां से चला जाता हूं। हज़रत उस्मान ने लिखा कि आप हज़रत उबादा रज़ि० को सवार करवाकर मदीना मुनव्वरा में उनके घर की तरफ रवाना कर दें। अत: हज़रत मुआविया ने उन्हें रवाना कर दिया और वह मदीना पहुंच गए। हज़रत उबादा रज़ि० हज़रत उस्मान रज़ि० के पास उनके घर चले गए जहां सिवाय एक आदमी के अगले पिछलों में से कोई न था अर्थात कोई ऐसा व्यक्ति जिसने सहाबा को देखा था। उन्होंने हज़रत उस्मान को मकान के कोने में बैठे हुए पाया। फिर आप ने उनकी तरफ ध्यान दिया और हज़रत उस्मान रज़ि० ने फरमाया कि हे उबादा बिन सामित रज़ि०! आपका और हमारा क्या मामला है? तो हज़रत उबादा रज़ि० लोगों के सामने खड़े होकर कहने लगे कि मैंने रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना है कि मेरे बाद ऐसे लोग तुम्हारे हुक्मरान होंगे जो तुम्हें ऐसे कामों की पहचान कराएंगे जिन्हें तुम नापसंद करते होगे। और ऐसे कामों को नापसंद करवाएंगे जिन्हें तुम पसंद करते होगे। अत: जो व्यक्ति अल्लाह की अवज्ञा करे उसआज्ञापालन न करो। अत: तुम अपने रब की सीमाओं से आगे न बढ़ो। (मुस्नद अहमद बिन हंबल, जिल्द 7 पृष्ठ 564-65, मुस्नद उबादा बिन सामित हदीस- 23149)

कुछ विषय हैं जिनमें मतभेद हो सकता है हज़रत अमीरे मुआविया रज़ि० और उबादा बिन सामित रज़ि० में भी इस प्रकार के कुछ ऐसे विषय पर मतभेद रहता था। पिछले ख़ुत्बे में भी यह जिक्र हुआ था कि हज़रत उमर रज़ि० के ज़माने में भी एक बार यह घटना हुई और क्योंकि हज़रत उबादा बिन सामित पहले सहाबा में से थे और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सीधे तौर पर उन्होंने यह विषय सुने हुए थे इसलिए बड़े विश्वास से यह उनके ऊपर अमल करने और करवाने वाले होते थे और यही कहा करते थे कि यही सही है। हज़रत उमर के ज़माने में जब अमीरे मुआविया से यह मतभेद हुआ तो हज़रत उमर रज़ि० ने अमीरे मुआविया रज़ि० को कह दिया कि उनसे तुमने कोई पूछताछ नहीं करनी जो विषय यह वर्णन करते हैं उनको करने दिया करो और जब यह मदीना आए थे तो उनको वापस भेज दिया। (सुनन इब्ने माज्जा किताबुल हसना बाब ताजीम हदीस रसूलुल्लाह.... हदीस 18)

लेकिन हज़रत उस्मान रज़ि० के ज़माने में दोबारा यह बात हुई तो हज़रत उस्मान ने उनको इन हालात के कारण वापस बुला लिया। बहरहाल हज़रत उबादा का एक विशेष पद था। वह कुछ बातों की व्याख्या कर सकते थे उन्होंने समझी हुई थीं, हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सीधे तौर पर सुनी हुई थीं और इस वजह से वह मतभेद करते थे और कुछ विषयों में बता भी दिया करते थे। उदाहरणतया लेनदेन का मामला है, बॉर्टर का मामला है, व्यापार का मामला है यह बहुत विस्तृत विषय है यहां इस समय वर्णन नहीं हो सकता इसमें भी उनका मतभेद अमीरे मुआविया से हुआ था। अत: उनके पास दलीलें थीं और उन्होंने उसके अनुसार अपनी व्याख्या की, अमीरे मुआविया ने अपनी व्याख्या की, लेकिन हर एक का यह काम नहीं है कि इस प्रकार मतभेद करता फिरे जब तक क़ुरआन और हदीस की स्पष्ट आयत उपस्थित न हो और इस ज़माने में फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जो बयान किया है उसमें बुनियादी चीज़ जो आवश्यक है याद रखने वाली है वह यह है कि अल्लाह तआला की सीमाएं जो हैं उनसे आगे नहीं बढ़ना उनके अंदर रहना है अत: यही हर अहमदी को अपने सामने रखना चाहिए और फिर आज्ञाकारिता के दायरे के अंदर रहना चाहिए।

अताअ वर्णन करते हैं कि मैं वलीद से मिला जो हज़रत उबादा बिन सामित, सहाबी रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बेटे थे, मैंने उनसे पूछा कि आपके पिता हज़रत उबादा की मौत के समय क्या वसीयत थी ? तो उन्होंने बताया कि उन्होंने यानी हज़रत उबादा ने मुझे बुलाया और कहा कि मेरे बेटे अल्लाह तआला से डर और जान ले कि तू अल्लाह का तक़्वा इख्त्यार नहीं कर सकता जब तक तू अल्लाह पर ईमान न लाए (अर्थात ईमान पूर्ण होना चाहिए) और हर प्रकार के अच्छी बुरी तकदीर पर भी ईमान न लाए। अत: अगर तू इसके अतिरिक्त किसी आस्था पर मरा तो तू आग में जाएगा। (सुनन तिर्मीज़ी

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

अब्वाबुल क़द्र....हदीस नंबर 2155)

हज़रत अनस बिन मालिक से रिवायत है कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैही वसल्लम हज़रत उम्मेहराम बिन्त मिल्हान के घर तशरीफ़ लाया करते थे जो हज़रत उबादा बिन सामित की पत्नी थीं। वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को खाना खिलातीं। एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत उम्मे हराम के घर आए तो उन्होंने आपको खाना खिलाया और आपका सर देखने लगीं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सो गए। उसके बाद इसी हालत में सोए हुए थे कि आप मुस्कुराते हुए उठे। हज़रत उम्मे हराम कहती हैं कि मैंने पूछा कि हे अल्लाह के रसूल आप किस बात पर मुस्कुरा रहे हैं? तो आपने फरमाया कि मेरी उम्मत में से कुछ लोग मेरे सामने प्रस्तुत किए गए जो अल्लाह के मार्ग में जंग के लिए निकले हुए हैं वह समुद्र में उस सवार हैं मानो तख्तों पर बैठे हुए बादशाह हैं या फरमाया कि उन बादशाहों की तरह है जो तख्तों पर बैठे हुए हों। बताने वाले ने संदेह किया कि कौन सा शब्द कहा था। अत: कहती हैं कि मैंने कहा कि या रसूल अल्लाह आप अल्लाह से दुआ करें कि वह मुझे भी उन लोगों में सम्मिलित करे। रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उम्मे हराम के लिए दुआ की। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपना सर रखा और सो गए फिर उसके बाद आप मुस्कुराते हुए जागे। कहती हैं मैंने पूछा कि या रसूलुल्लाह आप किस बात पर मुस्कुरा रहे हैं तो आपने फरमाया मेरी उम्मत में से कुछ लोग मेरे सामने प्रस्तुत किए गए हैं जो अल्लाह के मार्ग में जंग के लिए निकले हुए हैं फिर आपने पहली बार वाली जो बात थी जो पहले बयान हो चुकी है वह दोहराई। कहती थी मैंने कहा या रसूलल्लाह! अल्लाह से दुआ करें कि मुझे भी उनमें सम्मिलित कर दे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तुम तो पहले ही उन लोगों में सम्मिलित हो चुकी हो। उम्मे हराम अबू सुफियान के ज़माने में समुद्री सफर में सम्मिलित हुईं और जब समंदर से बाहर आईं तो अपनी सवारी से गिरकर मृत्यु को प्राप्त हो गईं। (सही बुखारी किताबुल जिहाद वस्सैर, बाब दुआ व जिहाद हदीस 2788-2789) आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उम्मे हराम के घर इसलिए जाते थे कि आपका एक महरम रिश्ता था, यह नहीं कि उनकी बीवी थी उनके घर चले गए। इस बारे में लिखा है कि उम्मे हराम मिल्हान बिन खालिद की बेटी हैं, कबीला बनी नज्जार से ताल्लुक रखती थीं, अनस रज़ि० की खाला थीं और उनकी मां उम्मे स्लैम की बहन हैं। यह दोनों यानी उनमें हराम और उम्मे स्लैम दूध के रिश्ते से या किसी निस्बती या अन्य संबंधी रिश्ते से आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खाला थीं। (अलइस्तेआब जिल्द 4 पृष्ठ 1931, प्रकाशित दारुल बहील, बैरूत 1992ई०)

इमाम नोवी ने लिखा है कि समस्त उलमा की सहमति है कि उम्मे हराम रज़ि० आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की महरम थीं और इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बे तकल्लुफ़ी के साथ बेझिजक दोपहर को कभी-कभी उनके यहां जाकर आराम किया करते थे। लेकिन महरमी जो है उसमें मतभेद है कि वह किस प्रकार की थी। महरम तो थीं यह तो सब मानते हैं परंतु किस प्रकार, किस रिश्तेदारी की वजह से इसमें कुछ लोगों ने मतभेद किया है। अल्मिनहाज बशरह सहीह मुस्लिम अज़ इमाम नौवी किताबुल अमारत, बाब फज़लुल गुरूफी अल्बहर हदीस 1912)

बहरहाल किसी ने किसी संबंध से महरम कहा है और किसी ने किसी संबंध से। हज़रत उम्मे हराम जब मुसलमान हुईं और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथ पर बैअत की और हज़रत उस्मान रजि० के ज़माने में उन्होंने अपने पति उबादा बिन सामित के साथ जो अंसार में से थे और बड़े प्रतिभाशाली सहाबी थे, जिनका वर्णन हो रहा है, उनके साथ अल्लाह के मार्ग में जिहाद के लिए निकलीं और रोम की धरती पर पहुंचकर शहीद हुईं। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो एक स्वप्न देखा था उसके अनुसार फिर उनकी शहादत भी हुई।

बुखारी की शरह उम्दतुल कारी और बुखारी की एक और व्याख्या इरशाद अंसारी में लिखा है कि हज़रत उम्मे हराम की मृत्यु 27 और 28 हिजरी में हुई। कुछ के निकट उनकी मृत्यु अमीरे मुआविया की हुकूमत में हुई थी। पहला कथन अधिक प्रसिद्ध है और जीवनी लिखने वालों ने उसी को बयान किया है कि हज़रत उस्मान के दौरे खिलाफत में यह समुद्री जंग हुई थी जिसमें उम्मे हराम की मृत्यु हुई थी। मुआविया के ज़माने में हज़रत मुआविया के ज़माने से अभिप्राय हज़रत मुआविया का ज़माना हुकूमत नहीं है बल्कि इससे अभिप्राय वह समय है जब हज़रत मुआविया ने रोम के विरुद्ध एक समुद्री जंग लड़ी थी और उस जंग में हज़रत उम्मे हराम भी अपने पति हज़रत उबादा बिन सामित के साथ सम्मिलित हुई थीं और इसी समुद्री जंग में से वापसी पर हज़रत उम्मे हराम की मृत्यु हुई थी और यह घटना हज़रत उस्मान के दौरे खिलाफत की है। (उम्दतुल क़ारी शरह सहीह बुखारी, जिल्द 14 पृष्ठ 128, इर्शादुस्सारी शरह सहीहुल बुख़ारी अश्शाहाबुद्दीन जिल्द 5 पृष्ठ 230 दारुल फ़िक्र बैरूत 2010 ई०)

जुनादा बिन अब्वामिया से रिवायत है कि जब हम हज़रत उबादा के पास गए तो वह बीमार थे हम लोगों ने कहा कि अल्लाह आपको सेहत दे, आप कोई हदीस सुनाएं जो आपने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुनी हो ताकि अल्लाह आपको लाभ पहुंचाए। आपने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें बुलाया और हमने आपकी बैअत की आपने जिन बातों की बैअत हमसे ली वह बातें यह थीं कि हम बैअत करते हैं इस बात पर कि हम अपनी खुशी और अपने गम और अपनी तंगी और अपने खुशहाली और अपने ऊपर प्राथमिकता दिए जाने की सूरत में सुनेंगे और आज्ञा पालन करेंगे और हुकूमत के लिए हाकिमों से झगड़ा नहीं करेंगे लेकिन सिवाय एलानिया कुफ्र करने के जिस पर अल्लाह की ओर से दलील हो। (सही बुखारी किताबुल फितन बाब कौलन्नबी हदीस 7055-7056)

सिवाय इसके कि एलानिया कुफ्र पर मजबूर किया जाए। स्पष्ट बातें हो तो वहां और बात है और वह भी अगर अनुमति मिलती है तब। सुनाबही रवायत करते हैं कि मैं हज़रत उबादा बिन सामित के पास गया जबकि वह मौत के निकट थे। मैं रो पड़ा तो उन्होंने कहा ठहरो क्यों रो रहे हो? ख़ुदा की कसम अगर मुझसे गवाही ली जाए तो मैं तुम्हारे हक में गवाही दूंगा और अगर मुझे सिफारिश करने का हक दिया गया तो मैं तुम्हारी सिफारिश करूंगा और अगर मुझे सामर्थ्य हुआ तो मैं तुझे लाभ पहुंचाउंगा। फिर उन्होंने कहा कि अल्लाह की क़सम हर हदीस जो मैंने

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्ररी जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुनी थी जिसमें तुम्हारे लिए भलाई थी वह मैंने तुम्हारे सामने बयान कर दी है सिवाय एक हदीस के जो मैं आज तुम्हें बताऊंगा जब कि मैं मौत की गिरफ्त में हूं। कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना आप फरमाते थे कि जिस ने गवाही दी 'अल्लाह के सिवा कोई उपासना के योग्य नहीं और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं', अल्लाह ने उस पर अग्नि को हराम कर दिया अर्थात वह मुसलमान है। (सही मुस्लिम किताब उल ईमान--- हदीस 29)

अल्लाह तआला इन सहाबा के दरजात बुलंद फरमाए जिन्होंने हमें कुछ ऐसी बातें पहुंचाई जो हमारे लिए रूहानियत के अतिरिक्त व्यवहारिक जिंदगी गुज़ारने के लिए भी ज़रूरी थीं।

अब मैं कुछ मरहूमीन का वर्णन करना चाहता हूं और उनकी नमाज़े जनाज़ा भी पढ़ाऊंगा जिनमें से पहले सईद सोकिया साहब सीरिया के हैं। 18 अप्रैल को उनकी मृत्यु हुई थी और बहरहाल सूचना देर से आई थी तो उनका जनाज़ा लेट पढ़ा जा रहा है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन। मरहूम सीरिया की जमात के अत्यंत निष्कपट और पुराने मेंबरान में से थे। उन्होंने 5 साल की उम्र में क़ुरआन करीम खत्म कर लिया था। बचपन से ही क़वायदे तज्वीद और क़ुरआन की किरत के माहिर थे। अक्सर अहमदी लोगों को तज्वीद क़ुरआन पढ़ाते थे। मोहतरम मुनीर उल हसनी साहब आप पर बड़ा भरोसा किया करते थे। उन्होंने कानून की शिक्षा प्राप्त की थी परंतु वकालत का पेशा अच्छा नहीं लगा और फिर उन्होंने टीचिंग की लाइन अपना ली और फिर पूरे देश में बेहतरीन अध्यापकों में उनका शुमार हुआ। देश के विभिन्न क्षेत्रों में पढ़ाया और हेड मास्टर के पद तक तरक्की की। मरहूम को तबलीग़ का बड़ा शौक था, हर किसी को तबलीग़ किया करते थे। कुछ साल पहले जब अरबिक डेस्क ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अरबी किताबें दोबारा प्रकाशित की, अनुवाद करके फैलाईं तो जो जो हुई थीं आपने सब का अध्ययन किया और कहा करते थे कि इतने लंबे समय अहमदी रहने के बाद अब मुझे ज्ञात हुआ है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने असल में क्या फरमाया है। अब पहली बार मुझे जमात की वास्तविकता ज्ञात हो रही है अब मैं वास्तविक इस्लाम अहमदियत के बारे में नए सिरे से मालूमात हासिल कर रहा हूं और आपके शिष्टाचार और सदव्यवहार और दान शीलता और खुद्दारी और इज्जत और बगैर किसी मुआवजे की इच्छा के दूसरों की सहायता जैसे अच्छाई आपका हर जानने वाला बयान करता है और उनसे बहुत प्रभावित था। और हर जानने वाला आपसे इन्हीं सदव्यवहार के कारण मोहब्बत करता था। अपने काम में मगन रहने वाले थे, हंसमुख थे, दयालु बाप थे, निष्कपट पति थे। आपके दोस्तों का दायरा बहुत व्यापक था। नमाज़ और इबादत के पाबंद थे। जब भी कोई रकम मिलती चंदा अदा करते। कभी-कभी सारी रकम ही चंदे में दे देते। अत: आप के तीन बेटे और तीन बेटियां हैं। आपके बड़े बेटे मोहम्मद साहब और छोटे बेटे जलालुद्दीन साहब अहमदी हैं अल्लाह तआला उनसे रहम और मगफिरत फरमाए, दर्जात बुलंद करे और उनकी औलाद के हक में उनकी दुआएं भी कुबूल करे और बाकी औलाद को भी सच्चाई पहचानने की तौफीक अता फरमा।

दूसरा जनाज़ा मुकर्रम अत्तय्यबुल अबीदी साहिब त्यूनस का है। 26 जून को 70 साल की आयु में उनका देहांत हुआ। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन। यह अपने इलाके में अकेले अहमदी थे अत्यंत निष्कपट और जमात और ख़लीफा से बहुत मोहब्बत करने वाले, खिलाफत से मोहब्बत करने वाले थे अपनी सारी उम्र लगभग मस्जिदों में व्यतीत की। क़ुरआन के आशिक थे बहुत अधिक ख़ुदा को याद करने वाले इंसान थे। जमात का परिचय होने पर अविलंब मरकज़ पहुंचे और तुरंत बैअत कर ली। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कलाम के आशिक थे। जुमा की अदायगी के लिए तकरीबन 5 घंटे रेलगाड़ी का सफर करके मरकज़ में पहुंचते थे। बहुत बहादुर इंसान थे जिससे भी मिलते अहमियत का परिचय अवश्य कराते। अपने खानदान और समाज की ओर से उन पर बढ़ा दबाव था परंतु यह अपने ईमान पर पुख्ता रहे। बैअत के पहले दिन से ही दिल खोलकर चंदा देना शुरू कर दिया। जब उन्हें निज़ाम-ए-वसीयत का ज्ञान हुआ तो उन्होंने तुरंत वसीयत कर ली। नौजवानों को ख़ुदा की राह में माल खर्च करने की बहुत प्रेरणा देते थे और कहते थे कि ख़ुदा के मार्ग में माल खर्च करना की बरकत से मेरे माल में बहुत बरकत हुई है। मरहूम को खाना काबा के हज की भी तौफीक मिली। जमात और खिलाफत के आप आशिक थे अल्लाह तआला उनसे भी रहम और मग़फिरत का सलूक फरमाए उनकी दुआएं और नेक तमन्नाएं उनकी औलाद के हक में और निकट संबंधियों के हक में कुबूल फरमाए।

तीसरा जनाज़ा मुकर्रमा और मोहतरमा अमतुश्शकूर साहिबा का है जो हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमतुल्लाह की सबसे बड़ी बेटी थीं 3 सितंबर को उनका देहांत 79 साल की आयु में हुआ। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन। आप जैसा कि मैंने बताया हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमतुल्लाह की बेटी थीं। इस दृष्टि से हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि० की पोती थीं और ननिहाल की ओर से हज़रत नवाब मुबारका बेगम साहिबा और हज़रत नवाब मोहम्मद अली खान साहब की नवासी थीं। अप्रैल 40 में क़ादियान में पैदा हुई। प्रारंभिक शिक्षा क़ादियान से प्राप्त की। फिर b.Ed लाहौर से किया। उनकी दो शादियां हुई थीं, उनकी पहली शादी जो नवाब अब्दुल्लाह खान साहब के बेटे शाहिद खान साहब से हुई थी उनसे उनकी औलाद है जिनमें 2 लड़के और 3 लड़कियां हैं। उनके एक बेटे आमिर अहमद खान वाकिफे ज़िन्दगी हैं और तहरीके जदीद में इस समय काम कर रहे हैं। उनके दो नवासे भी इस समय जामिया में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। दूसरी शादी उनकी डॉ मिर्ज़ा लईक़ साहिब से हुई थी उनसे कोई औलाद नहीं है। उनकी बड़ी जमाती सेवाएं तो नहीं लेकिन सामान्य तौर पर विभिन्न रूप से उनको विभिन्न जमाती इरादों में या लज्ना के शोबे में काम करने की तौफीक मिली और हर एक लिखने वाले ने यही लिखा है के बड़ी सहायता करने वाली थीं और बड़ी विनम्र स्वभाव की थीं, लिखने पढ़ने का भी उनको बहुत शौक था तो उन्होंने हज़रत अम्मा जान की सीरत भी लिखी है फिर एक दूसरी किताब हज़रत नवाब मुबारका बेगम साहिबा की लिखी है कि "मुबारका की कहानी मुबारका की ज़बानी" फिर यह तीसरी किताब भी जो हज़रत मिर्ज़ा शरीफ अहमद साहब रजि० की बेगम हज़रत बूज़ैनब साहिबा रजि० की जीवनी पर आधारित है, उन्होंने लिखी है जिसका मुसव्वदा पूरा हो गया है लेकिन हालात की वजह से प्रकाशित नहीं हो सकी तो यह उनकी तीन किताबें भी हैं। लज्ना के लिए एक अच्छा लिटरेचर है उनकी नवासी कहती हैं कि मेरी नानी हमेशा यह कहा करती थीं कि ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमतुल्लाह ने फरमाया था कि मुस्कुराते रहा करो क्योंकि यह सदक़ा होता है। उनकी बीमारी अत्यंत कष्टदायक थी। आखिर में पता लगा कि कैंसर है लेकिन बड़े हौसले और सब्र से उन्होंने बर्दाश्त किया। यह हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस भी हमेशा फरमाया करते थे कि उन्होंने हर तकलीफ बड़ी सब्र से बर्दाश्त की है। अल्लाह तआला उससे मग़फिरत और रहम फरमाए और उनके बच्चों और उनकी अगली नस्ल को भी खिलाफत और जमात से हमेशा वफा के साथ ताल्लुक क़ायम रखने की तौफीक अता फरमाए।

हां एक और बात है कि आज क्योंकि ख़ुद्दामुल अहमदिया का इस्तेमा शुरू हो रहा है इसलिए जुमा और असर की नमाज़ जमा होंगी।

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

देशों में हस्पताल और बहुत ज़्यादा स्कूल खोले हैं और रंग तथा नस्ल के भेद के बिना, मुसलमान, ईसाई सब छात्र पढ़ते हैं।

*यहां अमरीका में आने के मक़सद के बारे में से बात हुई तो हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: तीन मस्जिद के उद्घाटन का प्रोग्राम था। फिर ग्वेटामाला में हस्पताल के उद्घाटन का प्रोग्राम था। अपनी कम्यूनिटी के लोगों से मिलना था और फिर आप जैसे शरीफ़ों से मिलना था।

*मेम्बर कांग्रेस माईकल मुक काओल ने अहमदिया मुस्लिम कॉक्स (Caucas) का ज़िक्र किया तो हुज़ूर अनवर ने इन से पूछा कि क्या वह उस के चेयरमैन हैं? तो उन्होंने बताया कि इन के क़रीबी दोस्त मेम्बर कांग्रेस पैट्रिकिंग आफ़ न्यूयार्क उस के चेयरमैन हैं।

*जलसा सालाना यू.के का ज़िक्र होने पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि दुनिया के विभिन्न देशों से मेहमान आते हैं, चालीस हज़ार के लगभग संख्या हो जाती है। एक फ़ार्म में जलसा का आयोजन होता है और एक अस्थायी विलेज बनाया जाता है। इस सारे काम का सत्तर प्रतिशत वालनटीइरज़ करते हैं। वहां पुलिस डयूटी पर आती है तो कहती है कि हमारे यहां आने की ज़रूरत ही नहीं है। आपके नौजवानों ने सैक्योरिटी का सारा काम सँभाला हुआ है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: यहां भी बाहर पुलिस है वह अपनी डयूटी पर हैं। अंदर से तो किसी प्रबंध, सैक्योरिटी का कोई मस्ला नहीं है, बाहर से हो सकता है।

*कांग्रेस मैन ने हुज़ूर अनवर के लंदन में निवास और पाकिस्तान में जमाअत पर होने वाले अत्याचारों और हुक़ूक़ से महरूमी का ज़िक्र किया। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि मैं लंदन में रहता हूँ और पाकिस्तान में परसीकीवशन और अपने फ़राइज़ मंसबी अदा ना कर सकने की वजह से नहीं जा सकता।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: पाकिस्तान में 1974 ई में इस वक़्त के वज़ीर आज़म ज़ुल्फ़क़ार अली भुट्टो ने क़ानून बनाया था कि अहमदी क़ानूनी और आईनी तक़ाज़ों के कारण ग़ैरमुस्लिम हैं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि यहां लंदन आने से पहले मैं रब्वह में रहा हूँ। रब्वह, लाहौर से 100 मील के दूरी पर है और इस्लामाबाद से लगभग 250 मील का दूरी है। रब्वह की 97 प्रतिशत आबादी अहमदी है। इस के बावजूद वहां की लोकल कौंसल में हमारा कोई मैंबर नहीं है। वहां की लोकल कमेटी की इंतिज़ामीया में हमारा कोई मैंबर नहीं है। अब वहां दो प्रतिशत अक़ल्लीयत हम पर मुसल्लत है और हम पर रब्वह में हुकूमत कर रही है। वोट के हक़ से महरूमी के बारे में से हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि हुकूमत ने हमारे लिए यह शर्त रखी है कि अपने आपको ग़ैर मुस्लिम स्वीकार करो तो फिर वोट का हक़ मिलेगा। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आप जो मुझे समझते हैं, समझें लेकिन मुझ को मजबूर नहीं कर सकते कि मैं अपने आपको ग़ैर मुस्लिम कहूं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: मैं पाकिस्तान में रहता था, वहां जमाअत का हैड (नाज़िर आला) था। जमाअत के ख़िलाफ़ जो क़वानीन हैं उनकी वजह से मैं ख़ुद भी ग्यारह दिन जेल में रहा हूँ। जबकि मैंने कोई ग़ल्त काम नहीं किया, किसी को मारा नहीं, किसी विरोधी ने झूठी शिकायत कर दी। फिर बाद में मजिस्ट्रेट ने देखा कि शिकायत झूठी है और ग़लत तौर पर क़ैद किया गया है तो रिहाई हुई।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: ज़ियाउल हक़ ने अपने दौर में जमाअत के ख़िलाफ़ सख़्त क़वानीन बनाए। अस्सलामो अलैकुम नहीं कह सकते, तीन साल क़ैद की सज़ा होगी। बच्चों के नाम मुसलमानों के नाम की तरह नहीं रख सकते, शादी कार्ड पर बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्हीम लिखने की वजह से अहमदियों पर मुक़द्दमे बने। आजकल विभिन्न चार्जज़ की वजह से बहुत से अहमदी जेल हैं।

हम अपनी मस्जिद में जाते हैं, अज़ान नहीं कह सकते, मस्जिद को मस्जिद नहीं कह सकते।

*मेम्बर कांग्रेस ने इस बात पर हैरानी का प्रकट किया कि वज़ीर आज़म ज़ुल्फ़क़ार अली भुट्टो ने क्यों जमाअत अहमदिया को ग़ैर मुस्लिम क़रार दिलवाया जबकि वह ख़ुद को एक सैकूलर राहनुमा कहता था।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: एक तो यह कि भुट्टो ने सोचा कि अहमदी देश में महत्व धारण करते जा रहे हैं। इलैक्शन में अहमदिया कम्यूनिटी ने इस के लिए काम किया था और ख़ासकर इन इलाक़ों में किया था जहां उस को कोई जानता ना था। हमारी जमाअत एक मुनज़्ज़म जमाअत है। हमारे पास वोट थे। अत: अहमदिया कम्यूनिटी ही भुट्टो को इस स्टेज पर लाई थी कि इस ने हुकूमत बनाई।

फिर दूसरी बात यह है कि भुट्टो मुस्लिम वर्ल्ड का लीडर बनना चाहता था। उसने पाकिस्तान में summit कान्फ्रैंस का भी आयोजन किया जिसमें मुस्लिम देशों के लेडर शामिल हुए। भुट्टो ने सोचा कि अगर अहमदियों को ग़ैर मुस्लिम क़रार दे दूं तो मुसलमान देशों में मेरा एक मुक़ाम बन जाएगा। यह सारा मामला पोलीटिक्ल तौर पर हुआ।

*हुज़ूर अनवर के लंदन आने के बारे में से बात हुई तो हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि मैं तो चौथे ख़लीफ़ा हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलराबे रहमहुल्लाह की वफ़ात पर कुछ दिन के लिए लंदन आया था। इलेक्टिव रेल कॉलेज में शामिल था। मैं तो वापस जाने के लिए आया था। ख़लीफतुल मसीह चुना गया। अब मैं पाकिस्तान वापस नहीं जा सकता था। वहां किसी को अस्सलामो अलैकुम नहीं कह सकता, ख़ुत्बा जुम्अ: नहीं दे सकता था, अपनी ज़िम्मेदारी बहैसीयत ख़लीफतुल मसीह अदा नहीं कर सकता था।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: आज मैंने यहां हीवसटन में ख़ुत्बा जुम्अ: दिया है जो सारी दुनिया में यहां से टैली कासट हुआ है और उसका आठ भाषाओं में अनुवाद हुआ है। जबकि पाकिस्तान में यह नहीं हो सकता था।

इस पर मेम्बर कांग्रेस ने कहा: इस अवस्था में हुज़ूर अनवर अगर पाकिस्तान गए तो उनको गिरफ़्तार किया जा सकता है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि हाँ ऐसा ही होता।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: पाकिस्तान में मुल्ला का ज़ोर है। मुशर्रफ़ जब सदर था तो इस ने फ़ैसला किया था कि साझा इंतिख़्वाब होगा और अहमदी पाकिस्तान के शहरी होने के लिहाज़ से वोट दे सकते हैं तो इस फ़ैसला पर मुल्ला ने बहुत शोर मचाया तो इस ने मुल्ला के सामने घुटने टेक दिए।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: जो भी हुकूमत हो वह मुल्ला के दबाव में आ जाती है। अब इमरान ख़ां की हुकूमत है, उसने भी मुल्ला के सामने घुटने टेक दिए हैं। प्रोफ़ैसर आतिफ़ मियां जो यहां अमरीका की एक यूनीवर्सिटी में प्रोफ़ैसर हैं, उनको इमरान ख़ान ने हुकूमत की इकनॉमिक एडवाइज़री कौंसल में रखा था। इस पर मुल्ला ने शोर मचाया कि यह अहमदी है, इस को निकालो। अत: हुकूमत ने निकाल दिया और कहा कि अपना अस्तीफ़ा दे दो। हम मुल्ला का मुक़ाबला नहीं कर सकते।

*मुलाक़ात के आख़िर पर मेम्बर कांग्रेस ने निवेदन किया कि हुज़ूर अनवर दुनिया से इंतहापसंदी की समाप्ति और अमरीका में अमन के लिए खासतौर पर दुआ करें। और दरख़ास्त की कि हुज़ूर अनवर अभी हमारे लिए दुआ करें। हुज़ूर अनवर ने दुआ की कि अल्लाह तआला दुनिया से इंतिहापसंदों का ख़ात्मा करे और दुनिया में अमन स्थापित हो।

* मुलाक़ात के अन्त पर मेम्बर कांग्रेस ने निवेदन किया कि सारी मुस्लिम उम्मत को बल्कि सारी दुनिया को हुज़ूर अनवर की राहनुमाई और पैग़ाम की ज़रूरत है।

आख़िर पर महोदय ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। यह मुलाक़ात 5 बजकर 15 मिनट पर ख़त्म हुई।

मस्जिद बैतुलसमीअ की निक़ाब कुशाई का यादगार आयोजन

इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला मस्जिद के बाहरी हिस्सा में तशरीफ़ ले आए और मस्जिद की बाहरी दीवार में लगे एक यादगारी तख़्ती की निक़ाब कुशाई फ़रमाई और दुआ करवाई। इस तख़्ती पर निम्नलिखित इबारत लिखी गई थी।

30 जून 1998 ई दिनांक मंगल हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलराबे रहमहुल्लाह ने इस मस्जिद की बुनियाद रखी। इस मस्जिद का उद्घाटन भूतपूर्व अमीर जमाअत अमरीका आदरणीय डाक्टर एहसानुल्लाह ज़फ़र साहिब ने दिनांक जुमअतुल दो अप्रैल 2004 ई को किया। इस अवसर पर हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने निम्नलिखित पैग़ाम भेजा।

अल्हम्दु लिल्लाह कि जमाअत अहमदिया हीवसटन को एक ख़ूबसूरत मस्जिद बनाने की तौफ़ीक़ मिली है। अल्लाह बहुत मुबारक फ़रमाए और सारी माली क़ुर्बानी करने वालों को नेक बदला दे और उनके मालों तथा नफ़ूस में बरकत डाले।

इसी तरह मस्जिद से जुड़ी सारी बरकतों से इस इलाक़ा, इस शहर और जमाअत अहमदिया के हर लोग को फ़ैज़याब फ़रमाए।

मस्जिद की बुनियाद का असल उद्देशय ही यही है कि उन में ख़ुदा के बंदे एक ख़ुदा की इबादत के लिए जमा हों और मस्जिद की असल सुन्दरता इन नमाज़ियों के साथ ही जुड़ी है। अत: आपका असल काम अब शुरू हुआ है कि आपने ख़ालिस अल्लाह की लिए इबादत करने वाले नमाज़ियों से इस मस्जिद को आबाद करना है। अल्लाह आपको अपनी ख़ालिस इबादत करने वाले बंदों में शामिल करे और यह मस्जिद ऐसे ही इबादत करने वाले बंदों से भरी रहे।

आज 21 अक्तूबर दिनांक इतवार यह तख़्ती हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफतुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के पहले तारीख़ी दौरा की यादगार के तौर पर लगाई जा रही है।

तख़्ती की निक़ाब कुशाई के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ वापस अपने दफ़्तर तशरीफ़ ले आए।

दो प्रोफ़ेसरों की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

प्रोफ़ैसर क्रेग कानसीडाइन माहिर सोशियालोजी राईस यूनीवर्सिटी अमरीका और प्रोफ़ैसर इमरान अलबदावी माहिर उलूम मशरिक़ वुसता और अरबी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात के लिए आए हुए थे। मुलाक़ात के आरम्भ पर दोनों प्रोफ़ैसर साहिबान ने अपना परिचय करवाया। इस के बाद प्रोफ़ैसर इमरान अलबदावी ने हुज़ूर अनवर की सेवा में अपनी किताब (The Quran and the Aramaic Gospel Traditions) पेश की। हुज़ूर अनवर ने महोदय का शुक्रिया अदा किया।

प्रोफ़ैसर अलबदावी साहिब ने अपने मौजूदा प्राजैक्ट के बारे में बताया जो कि समाज और क़ुरआन के बारे में है और साथ ही एक कान्फ्रैंस का ज़िक्र किया जिसका आयोजन उन्होंने किया था और पाकिस्तान से आदरणीय मुजीबुल रहमान साहिब ऐडवोकेट ने इस में शमूलीयत की थी। प्रोफ़ैसर महोदय ने कहा कि जमाअत अहमदिया की पेश की गई क़ुरआन की व्याख्या बिलकुल वास्तवकिता के अनुसार है और वह जमाअत अहमदिया के इस काम को सराहते हैं और इज़्ज़त की निगाह से देखते हैं।

हुज़ूर अनवर ने प्रोफ़ैसर अलबदावी साहिब से पूछा कि क्या उन्होंने हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि की किताब दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन का अध्ययन किया है? इस पर महोदय ने निवेदन किया कि नहीं पढ़ी। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि प्रोफ़ैसर साहिब को यह किताब दी जाए। अत: प्रोफ़ैसर साहिब को यह किताब मुहय्या कर दी गई। इस पर महोदय ने हुज़ूर अनवर का शुक्रिया अदा किया।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन के पहले हिस्सा में धर्मों और धर्मों के मध्य तुलना की गई है। जबकि दूसरे हिस्सा में हज़रत नबी करीम के हालात ज़िन्दगी बयान किए गए हैं।

इसके बाद प्रोफ़ैसर कानसीडाइन ने अपनी किताब के लिए शैक्षिक काम का ज़िक्र किया जो कि डबलिन (आयरलैंड) और बॉस्टन (अमरीका) में नौजवान मुसलमान लड़कों के विचारों और आदतों के बारे में है।

हुज़ूर अनवर ने प्रोफ़ैसर साहिब से पूछा कि उन्होंने नौजवान मुसलमान लड़कियों को इस में शामिल क्यों नहीं किया? इस पर प्रोफ़ैसर साहिब ने कहा कि उसकी वजह लड़कियों के इंटरव्यू के लिए समाजी रुकावटें हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: कोई भी तहक़ीक़ मुसलमान लड़कियों के इंटरव्यू के बिना पूर्ण नहीं हो सकती। हुज़ूर अनवर ने प्रोफ़ैसर साहिब को मश्वरा दिया कि वह इस काम के लिए दुनिया के विभिन्न हिस्सों का सफ़र कर सकते हैं। जैसा कि अफ़्रीक़ा, एशिया या आस्ट्रेलिया और वह अहमदी मुसलमान लड़कियों के इंटरव्यू से इस का आरम्भ कर सकते हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि आधा धर्म आईशा रज़ि से सीखो। इस का अर्थ है कि एक मुसलमान औरत को धार्मिक इल्म है, धार्मिक इलम पर उबूर प्राप्त है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: औरत की इस्लाम में बड़ी भूमिका है, बड़ा स्थान है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि जन्नत माँ के क़दमों के नीचे है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: अब आपकी अगली किताब Woman in Islam पर आनी चाहिए। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: आप अहमदी मुस्लिम औरत से इंटरव्यू पाकिस्तान में लेंगे तो आपको पता चलेगा।

प्रोफ़ैसर साहिब ने हुज़ूर अनवर की राहनुमाई का शुक्रिया अदा किया और कहा कि अब उनको अपनी नई किताब के लिए राहनुमाई मिल गई है।

इस बात का भी ज़िक्र हुआ कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने पीस सिंपोज़ियम यू.के के अवसर पर अपने सम्बोधन में प्रोफ़ैसर कानसीडाइन का बारे में दिया था। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि बाद में, मैंने प्रोफ़ैसर साहिब का एक ट्वीट भी पढ़ा था, जिसमें उन्होंने बारे में देने की ख़बर मिलने का ज़िक्र किया था। इस पर प्रोफ़ैसर साहिब ने निवेदन किया कि उन्हें बड़ी ख़ुशी है कि इतनी बड़ी हस्ती ने उनके बारे में विशेष रूप से ज़िक्र किया है।

प्रोफ़ैसर अलबदावी साहिब से हुज़ूर अनवर ने पूछा कि आपका सम्बन्ध कहाँ से है? इस पर महोदय ने निवेदन किया कि पिता जी का सम्बन्ध मलेशीया से है और माता साहिबा मिस्र की हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: इस बैकग्राऊंड की वजह से तो आपको अरबी ज़बान का माहिर होना चाहिए। प्रोफ़ैसर अलबदावी साहिब ने निवेदन किया कि वह बुनियादी तौर पर अरबी पर उबूर रखते हैं बल्कि वो अरबी ज़बान और अदब पढ़ाते रहे हैं।

हुज़ूर अनवर ने प्रोफ़ैसर साहिबान से फ़रमाया कि यूके जलसा पर आएं, वहां दुनिया के विभिन्न देशों से लोग आते हैं और 40 हज़ार के लगभग हाज़िरी होती है। इस साल अगस्त 2019 ई के पहले हफ़्ता में यह जलसा है।

प्रोफ़ैसर कानसीडाइन साहिब ने निवेदन किया कि हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात के लिए आने से पहले, हम हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला का वह ख़िताब सुन रहे थे जो आपने ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट यू.के के एक प्रोग्राम में फ़रमाया था। इस ख़िताब में हुज़ूर अनवर ने वह हदीस पेश फ़रमाई थी जिसमें ख़ुदा तआला कहता है कि मैं भूखा था, मैं प्यासा था और मैं नंगा था, तुमने ना मुझे खाना दिया, ना पानी दिया और ना लिबास मुहय्या किया। प्रोफ़ैसर महोदय ने निवेदन किया कि मेरे बहुत से अहमदी लोगों दोस्त हैं और मेरे उन से बड़े अच्छे सम्बन्ध हैं।

प्रोफ़ैसर अलबदावी साहिब ने निवेदन किया कि वह अपने लैक्चरज़ में जिहाद के बारे में जमाअत अहमदिया का मौक़िफ़ पेश करते हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: अगर आप चार्टर आफ़ मदीना को अपनाईं तो अमन वाला समाज बना लेंगे। आज इस्लामी दुनिया इस पर बिलकुल अनुकरण नहीं कर रही लेकिन यह इन्सानी हुक़ूक़ का पहला क़ानून था जिस पर अगर अनुकरण किया जाए तो समाज अमन का घर बन सकता है।

अब पाकिस्तान में इमरान ख़ान साहिब ने कहा था कि में इस पर अनुकरण करूँगा लेकिन वह नहीं कर सका।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फ़रमाया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज्जतुल विदा के अवसर पर जो ख़ुत्बा इरशाद फ़रमाया था वह चार्टर आफ़ हियूमन राईट्स है। अगर इस पर अनुकरण किया जाए तो फिर किसी पक्ष, किसी क़ौम के हक़ मारे नहीं जाएगे और किसी से ज़्यादती नहीं होगी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फ़रमाया: चार्टर आफ़ मदीना और आख़री ख़ुत्बा हज्जतुल विदा यह सच्चा इस्लाम है और यह असल और वास्तविक इस्लाम है।

चार्टर आफ़ मदीना में हुकूमती तरीक़ा बताया गया है जबकि हज्जतुल विदा के ख़ुत्बा में इन्सानी इक़दार की स्थापना और इन्सानी अधिकारों के सम्मान की शिक्षा दी गई है।

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

आख़िर पर प्रोफ़ैसर अलबदावी साहिब ने निवेदन किया कि वह हुज़ूर अनवर को राईस यूनीवर्सिटी के बेकर इंस्टीटियूट में ख़िताब की दावत देना चाहते हैं जो कि विभिन्न राहनमाओं को बुलाने वाली प्रमाणिक संस्था है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया शायद भविष्य में किसी वक़्त दौरा के दौरान शैडूल की तुलना से यह संभव हो सके।

हुज़ूर अनवर ने प्रोफ़ैसर कानसीडाइन साहिब से पूछा कि क्या आप कैथोलिक मज़हब पर अनुकरण कर रहे थे? इस पर महोदय ने जवाब दिया कि वह अपने मज़हब पर अनुकरण कर रहे हैं। शायद इस वजह से कि वह आइरिश नस्ल के हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि मज़हब पर अनुकरण करने वाला शख़्स बेहतर है चाहे मज़हब कोई भी हो।

यह मुलाक़ात पाँच बज कर पच्चास मिनट तक जारी रही। आख़िर पर दोनों प्रोफ़ैसर साहिबों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

26 अक्तूबर 2018 दिनांक जुम्अ:

वाक़फ़ात नौ बच्चियों की हुज़ूर अनवर के साथ क्लास

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला सवा छ: बजे मस्जिद के मर्दाना हाल में तशरीफ़ लाए जहां प्रोग्राम के अनुसार वाक़फ़ात नौ की क्लास का आयोजन हुआ।

प्रोग्राम का आरम्भ तिलावत क़ुरआन करीम से हुआ जो प्रिया माहीन वड़ाइच ने की और इस का उर्दू अनुवाद प्रिया तूबा ख़ुरशीद और इस के बाद अंग्रेज़ी अनुवाद प्रिया शाफिया बशीर अहमद ने पेश किया।

इसके बाद प्रिया फ़ाइरा मुबय्यन ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की निम्नलिखित हदीस पेश की। हज़रत अबूहरैरह रज़ि बयान करते हैं कि एक दुआ मैंने रसूल करीम से ऐसी सीखी थी जिसे मैं कभी भी पढ़ना भूलता नहीं। जो यह है:

اللھم اجعلنی اعظم شکرک واکثر ذکرک واتبع نصیحتک واحفظ وصیتک

(मस्नद अहमद, जिल्द 2,पृष्ठ 311) हे अल्लाह मुझे ऐसा बना दे कि तेरा बहुत ज़्यादा शुक्र कर सकूं और बहुत ज़्यादा तुझे याद करूँ और तेरी ख़ैर ख़्वाही की बातों की पैरवी करूँ और तेरे ताकीदी हुक्मों की हिफ़ाज़त (अपने अनुकरण से) कर सकूं।

इस के बाद इस हदीस नबवीऐ का अंग्रेज़ी ज़बान में अनुवाद प्रिया माहदा जावेद सैफी ने पेश किया।

इस के बाद प्रिया हमदह इर्फ़ान ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का निम्नलिखित इरशाद मल्फ़ूज़ात से पेश किया:

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: भी मेरे ही लिए है ...फिर यह भी जमा है कि ख़ुदा तआला ने तब्लीग़ के सारे सामान जमा कर दिए हैं। अत: प्रकाशन के सामान, काग़ज़ की अधिकता, डाकख़ानों, तार और रेल और भाप के जहाज़ों के द्वारा सारी दुनिया एक शहर का हुक्म रखती है और फिर नित नई ईजादें इस जमा को और भी बढ़ा रहे हैं क्योंकि तब्लीग़ के माध्यम जमा हो रहे हैं। अब फ़ोनो ग्राफ़ से भी तब्लीग़ का काम ले सकते हैं और इस से बहुत अजीब काम निकलता है, अख़बारों और रिसालों का आरम्भ। अत: इस क़दर सामान तब्लीग़ के जमा हुए हैं कि इस की तुलना किसी पहले ज़माना में हम को नहीं मिलती।

(अल्हकम, जलद 6, नंबर 43 , दिनांक 30 नवंबर 1902 ई)

इसके बाद प्रिया दानिया इफ़्फ़त अहमद ने इस उद्धरण का अंग्रेज़ी भाषा में अनुवाद पेश किया।

इस के बाद प्रिया मलीहा जलाल लुक़्मान ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मंजूम कलाम

दीं की नुसरत के लिए इक आसमां पर शोर है
अब गया वक़्त ख़िज़ां आए हैं फल लाने के दिन

में से चुने हुए अशआर पेश किए।

इसके बाद प्रिया हाला तारिक़ भट्टी ने हुज़ूर अनवर को ख़ुश आमदीद कहा। इस के बाद प्रिया लबीबा सईद, प्रिया अमामा लारीब और प्रिया हुमा मुनीर ने ऐम. टी. ए। हमारा ख़िलाफ़त से सम्बन्ध का माध्यम" के विषय पर एक परीज़नटीशन दी।

इस के बाद प्रिया माहिम अहमद ने उर्दू ज़बान में मैं तेरी तब्लीग़ को ज़मीन के किनारों तक पहुंचाऊंगा के विषय पर तक़रीर की।

इस के बाद प्रिया आलीया बिलाल राना, प्रिया अम्बर महमूद, प्रिया अस्मा यासीन और प्रिया फ़ातिमा ज़फ़र तंवली ने टेक्सास शहर की सैर के विषय से एक परीज़नटीशन दी।

बाद में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सवालों को करने की इजाज़त प्रदान फ़रमाई।

* एक वाक़फ़ा नौ ने पूछा कि मेरे वालिद चाहते हैं कि मैं मैडीकल पढ़ूं और इसी लिए बायो मैडीकल पढ़ रही हूँ जबकि मुझे वकील बनने का शौक़ है तो इस सूरत में क्या करूँ? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मेडीकल पढ़ने का शौक़ पैदा करो क्योंकि हमें डाक्टरों की ज़रूरत है वकीलों की नहीं। आपके अब्बा जो कहते हैं ठीक कहते हैं।

*इसी वाक़फ़ा नौ ने कहा कि मेरा दूसरा सवाल यह है कि बेहतरीन इक़तिसादी निज़ाम कौन सा है जैसा कि अमरीका में कैपिटल इज़म है या सोशल इज़म ? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: बेहतरीन निज़ाम इस्लामी आर्थिक निज़ाम है। इस के लिए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह अन्हो की किताब इस्लाम का इक़तिसादी निज़ाम पढ़ें जो आपको विस्तार से मुहय्या कर देगी। उसे दो शब्दों में या चार मिन्टों में बयान नहीं किया जा सकता। इस्लामी निज़ाम ना ही सोशल इज़म है और ना ही कैपिटल इज़म बल्कि उस का बुनियादी नुक़्ता यह है कि प्रत्येक की ज़रूरत पूरी करनी है। इस के लिए ज़कात है और दूसरे टैक्सिज़ हैं बाक़ी विस्तार से किताब से पढ़ें।

*एक वाक़फ़ा नौ बच्ची ने बताया कि वह रब्वा से पोर्ट लैंड जमाअत में आई है और हुज़ूर अनवर की तहरीक पर बैतुल फ़तूह के लिए कुछ ज्यूलरी देना चाहती है। बच्ची ने कहा कि इस की इच्छा है कि वह हुज़ूर अनवर की सेवा में पेश करे। हुज़ूर अनवर ने पूछने फ़रमाया कि क्या नाम और पता लिख दिया है? ताकि उस की रसीद भिजवाई जा सके। जिस पर बच्ची ने कहा जी लिख दिया है तो इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया ठीक है

*एक वाक़फ़ा नौ बच्ची ने सवाल किया कि हुज़ूर अनवर ने वक़्फ़ नौ बच्चों के लिए तहरीक फ़रमाई है कि वे उर्दू सीखें लेकिन यहां सारे इजलास और इजतिमाआत इंग्लिश में होते हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इंग्लैंड में भी ऐसे ही था, लेकिन अब हमने शुरू किया है कि सत्तर प्रतिशत कार्रवाई इंग्लिश और तीस प्रतिशत उर्दू में हो। पहले यह इसलिए था कि अधिकतर इंग्लिश समझती थी और उर्दू बहुत कम को समझ आती थी लेकिन यहां अब immigrants की एक बड़ी संख्या आई है इसलिए यहां भी ऐसा किया जा सकता है कि जब तक वह सही तरह से इंग्लिश नहीं सीख लेते उन्हें यह सुविधा मिलनी चाहिए। बहरहाल एक वाक़फ़ा नौ को उर्दू आनी चाहिए।

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,

JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 4 Thursday 10 October 2019 Issue No. 41

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: माशा अल्लाह जैसे तुम सब वाक़फ़ात नौ मेरे सामने स्कार्फ ओढ़ कर बैठी हो, तुम्हें दूसरी लड़कियों के लिए अनुकरण योग्य नमूना होना चाहिए और इसी तरह तुम्हारे अख़लाक़, नमाज़ें, गुफ़्तगु और लिबास भी। आपके लिबास में लज्जा होनी चाहिए और स्कार्फ ओढ़े होना चाहिए। सिर्फ बातें करने, नारे लगाने या तराने पढ़ने से कुछ नहीं होता बल्कि वाक़फ़ात नौ को व्यवहारात्मक नमूना दिखाना पड़ेगा।

*एक वाक़फ़ा नौ बच्ची ने सवाल किया कि अगर कोई शख़्स बुरे काम करता हो जैसे कि बेंक डकैती लेकिन फिर इस में नेक तबदीली हो तो क्या वह जन्नत में जा सकता है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आख़री फ़ैसला तो अल्लाह तआला का है। अल्लाह तआला को पता है कि किस ने कहाँ जाना है ? लेकिन अल्लाह तआला कहता है कि अगर कोई अपने आपको तबदील कर ले और गुनाहों की तौबा करे और अल्लाह तआला की बातें माने तो अल्लाह तआला उसे जन्नत में ले जाएगा।

*एक वाक़फ़ा नौ बच्ची ने सवाल किया कि आम तौर पर मर्दों और औरतों के मध्य पर्दा होता है लेकिन जब हज पर जाते हैं तो वहां औरतों और मर्दों के मध्य पर्दा ना होने की क्या हिक्मत है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: हज एक ऐसी इबादत है जो कि पूरे चिन्तन और ध्यान से होती है। कम से कम अल्लाह तआला तो यही चाहता है। मर्द औरत की तरफ़ ना देखे और औरत मर्द की तरफ़ ना देखे। इसलिए यह एक वजह हो सकती है लेकिन आज कल जो हज के लिए जाते हैं उनका तो कोई ईमान ही नहीं है उनके तो पता नहीं हज भी क़बूल होते हैं कि नहीं। हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ी अल्लाह अन्हो जब 1912-13 ई में हज के लिए गए तो फ़रमाते हैं कि इंडिया से एक चौबीस पच्चीस साल का लड़का भी हज पर गया हुआ था जो कि हज के दौरान बजाय दुआएं करने के फ़िल्मी गाने गा रहा था तो ऐसे लोग भी होते हैं। हज तो पूर्ण इन्हिमाक और ध्यान चाहता है। यही एक वजह बयान हो सकती है। बाक़ी जो हमें बताया गया हमने तो इस तरह ही करना है। आंहुज़ूर के ज़माने में बिना किसी चादर के बिना किसी पर्दा के और बिना किसी दीवार के मर्द आगे नमाज़ें पढ़ा करते थे और औरतें पीछे नमाज़ें पढ़ती थीं, वह भी ज़माना था। यह पर्दा तो तुम्हारी सुविधा के लिए है। हज में औरतों के लिए मर्दों की तरह एहराम नहीं होता वे अपना लिबास पहन कर भी हज कर सकती हैं।

*एक वाक़फ़ा नौ बच्ची ने सवाल किया कि अगर आपका पति आपको बेपर्दगी के लिए कहे तो फिर क्या करना चाहिए? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: तुम यह फ़ैसला करो कि अल्लाह की बात माननी है या पति की। जैसे मैंने अभी कहा है कि आपका लिबास लज्जा वाला होना चाहिए। लज्जा ईमान का हिस्सा है। लज्जा ही असल चीज़ है और पर्दे का हुक्म अल्लाह तआला का है। वह तो हमने बात माननी है। पाकिस्तान में क़ानून कहता है कि तुमने अपने आपको मुसलमान नहीं कहना और सलाम नहीं कहना तो क्या अहमदी यह बात मानते हैं ? बाक़ी क़ानून की सब बातें मान लेते हैं लेकिन क़ानून की यह बात नहीं मानते क्योंकि अल्लाह तआला के हुक्म के विरुद्ध है। तो आपका यह उसूल होना चाहिए कि जो भी बात अल्लाह तआला के हुक्म से टकराए चाहे वह माता पता कहें, पति कहे या कोई भी कहे वह नहीं माननी।

वाक़फ़ात नौ की यह क्लास 7 बज कर 10 मिनट तक जारी रही। आख़िर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने इस क्लास में शामिल होने वाली वाक़फ़ात नौ बच्चियों को जाए नमाज़ प्रदान फ़रमाए।

(शेष.....)

पृष्ठ 1 का शेष

इल्हाम ही के रूप में नज़र आती हैं।

बुद्धिमान वह है जो नबी को पहचानता है

यह ख़ुदा तआला का फज़ल और उसकी रहमानियत की मांग है कि उसने संसार में अपने नबी भेजे। बुद्धिमान वह है जो नबी को पहचानता है क्योंकि वह ख़ुदा को पहचानता है। और मूर्ख वह है जो नबी का इन्कार करता है क्योंकि नबूवत का इंकार ख़ुदा के इंकार के लिए अनिवार्य है। और जो वली की पहचान करता है वह नबी की पहचान करता है। दूसरे शब्दों में यूं कह सकते हैं कि नबी अल्लाह तआला के लिए एक लोहे की कील के समान है और वली नबी के लिए। अब ज़रा ठंडे दिल से सोचो कि अल्लाह तआला ने तेरह सौ वर्ष पहले इस सिलसिले को संसार में प्रकट किया और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के द्वारा प्रकट किया। परंतु आज तेरह सौ वर्ष पश्चात और उस समय कि जब 14वीं सदी के भी 15 साल बीत गए, उसको आर्यों, ब्रह्मुओं नेचरियों और नास्तिकों या ईसाइयों के सामने बयान करो तो वह हंस देते हैं और मज़ाक उड़ाते हैं। ऐसी मुसीबत के समय में एक ओर आधुनिक ज्ञान का प्रकाश, दूसरी ओर स्वभाव में एक विशेष परिवर्तन पैदा हो जाने के बाद विभिन्न संप्रदायों और धर्मों की अधिकता है, इन मामलों का प्रस्तुत करना और लोगों से मनवाना बहुत ही कठिन बात हो गई थी और इस्लाम तथा उसकी बातें एक किस्सा-कहानी समझी जाने लगी थीं लेकिन अल्लाह तआला ने जो إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَ إِنَّا لَهُ لَحٰفِظُوْنَ (सूरः हिज्र-10) का वादा देकर कुरान और इस्लाम की सुरक्षा की स्वयं जिम्मेदारी उठा कर, मुसलमानों को इस मुसीबत से बचा लिया और फ़ितने में पड़ने न दिया। अतः मुबारक हैं वह लोग जो इस सिलसिले की क़दर करते और उससे लाभ उठाते हैं। बात यह है कि अगर सबूत न मिले तो यह बिल्कुल ठीक है लेकिन जैसा इंसानी स्वभाव की विशेषता है कि वह कुधारणा की और झट मुड़ जाते हैं तो आंतरिक रूप से भी लोग एक किस्सा कहानी समझकर कुरान और इस्लाम से विमुख हो जाते। उदाहरणस्वरूप देखो अगर अंदर 'खट' की आवाज़ हो तो बाहर वाला अकारण समझ लेता है कि अंदर कोई आदमी अवश्य है परंतु वह जब दो-चार दिन तक देखता है कि अंदर से कोई नहीं निकला तो फिर उसका विचार परिवर्तित होने लगता है और फिर अंदर जाने के बिना ही वह समझ लेता है कि अगर इंसान होता तो उसको खाने पीने की आवश्यकता पड़ती और वह अवश्य बाहर आता।अगर नबूवत के अनवार और बरकतें जो वह्यी-ए-विलायत के रंग में आते हैं इस फिलॉस्फी और रोशनी के ज़माने में ज़ाहिर न होते तो मुसलमानों के बच्चे मुसलमानों के घर में रहकर इस्लाम और कुरान को एक किस्सा, कहानी और दास्तान समझ लेते और इस्लाम से उनको कोई वास्ता और संबंध न रहता। इस प्रकार मानो इस्लाम को समाप्त करने का सिलसिला बंध जाता। परंतु नहीं! अल्लाह तआला का स्वाभिमान, उसका वादा पूर्ण करने का जोश कब ऐसा होने देता था। जैसा कि अभी मैंने कहा कि ख़ुदा तआला ने वादा फरमाया है कि-

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَ إِنَّا لَهُ لَحٰفِظُوْنَ (सूरः हिज्र-10)

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 78 से 81)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad